

२१०
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

४१०/४०१० (५७३)

ग्रंथ नाम

महाभारत

विषय

कथा-पुराणे

21/11/1911





श्रीगणेशाय नमः श्रीहरस्यै नमः श्रीगु
 रुरभ्यो नमः श्रीसुखाय नमः ॐ नमो जिग
 जवदना ॥ नागाननापन्नगशुषेण ॥ येकदंतामि
 नयना ॥ मुशकवाहनो तु जनमुः ॥ १ ॥ नमुशारदा
 नंदिनिः ॥ मुक्तावंतमुकवदनिः ॥ अर्चुनिवदिलि
 जेसुरगणिः ॥ हंसवाहिनितेनमुः ॥ २ ॥ नमुसंसा
 रमोहोत्तमातका ॥ मुमुक्षासुधकास्यपददाय
 का ॥ उर्ध्वठमवाणवत्तरका ॥ देहधारका तु जन
 मुः ॥ ३ ॥ अतानमुश्रोते सज्जना ॥ ज्ञेयानवैराग्ये
 मति साधनः ॥ मजदेउनिवृत्तदाने ॥ कथानुस
 धानपरिस्सावे ॥ ४ ॥ मोक्षश्चियेपि यापरि ॥ प्रथ
 मनामेअयुध्यापुरि ॥ ज्ञानस्यतपत्तया मासा

रि॥ राज्येकरि हरिश्चंद्र॥ ५॥ सुर्येवंशि क्षिराब्धि
सोम॥ किर्तिप्रकाशे उज्ज्वलव्योम॥ प्रज्ञाव
ह्निते सुखपरम॥ मालागिनाम हरिश्चंद्र॥ ६॥
शेभृकिरणालागि हरि॥ माघसज्जना सुधा
कारि॥ क्षितिपाकियालागि हरि॥ चंद्रनाम
तथाचे॥ ७॥ धैर्ये सदाचाकनकमेत॥ दानिमे
घत्ते साउदार॥ प्रज्ञापावणिममकावर॥ श
क्रातुलये प्रतापि॥ ८॥ अपुलिअशा सिंधुवस
नि॥ परिधानभूरा निधाराकामिनि॥ प्रताप
विर्येभोगुनिजेनि॥ नरासनि विराजे॥ ९॥
अंसारजाचे भवति॥ सभामउकि विशा
वकिति॥ सिक्कासनि निजेरपत्ति॥ शो

ॐ ते सा शोभला ॥ १० ॥ बैसला वेदित प्रधा
नि ॥ उभये जागि वेत्त पाणि ॥ मंगळतुरा
वियाध्वनि ॥ नाद गगनि न समाये ॥ ११ ॥ स
जे साधु तवेश्वर ॥ कथाचे चरित गोधार ॥ ते
णेश्वर गजेश्वर ॥ सुख निभरि मानसि ॥ १२ ॥
तव अकस्मात गगन पये ॥ नारद मुनि पा
तला ते ये ॥ विणावा जनि मधुर लाते ॥ वद
नि गात विष्णु कथा ॥ १३ ॥ जो ज्ञानार विदिचा
मकरंद ॥ वैराग्ये वल्लिचा मुळकंद ॥ विवेक
सागरिचा पुर्णेद ॥ तो नारद पातला ॥ १४ ॥
राये देखला चिनयनि ॥ धावो निमस्त बूठे
विलाचे रणि ॥ जय जय कारे महा मुनि ॥

सिद्धासनिबैसविला ॥ १५ ॥ कनकपात्रिभुजजे
क ॥ गुयेचेरणक्षाकणकेले ॥ कस्तुरिचेदेन
चेचिले ॥ भाकिरेखिले केशोर ॥ १६ ॥ नानापु
स्पयातिमाका ॥ गणितनाहिसुगंधपरि
मका ॥ नैवेद्यलाबुलादिसोहका ॥ उपच्या
रेपुजिलानारद ॥ १७ ॥ देवोनिरायार्चिवि
नयभक्ति ॥ नारदसुखावलाचिति ॥ अज्ञा
भागोनिगगनपं ॥ १८ ॥ गमनकेलेनारदे ॥
१९ ॥ अलाशेकापियाभुवना ॥ सवेगपात
लामउपस्थाना ॥ इंद्रेनमस्कारोनिचेरणा
केलेपुजेनविद्युत्त ॥ २० ॥ सभादाठति
घनदाठ ॥ बैसलेविश्वामित्रवसिष्ठ ॥

अणि क हि श्रे क श्रे क त पो नि क वै स ले -
२० मु म उ वि श र यु त वि ॥ अ यु ध्या पु रि अ
ति गो म वि ॥ म ज पा त ता स क क श्रु कि ॥ न
दि से द्र कि अणि क ॥ २१ ये क अ शा ये क ढे मि ॥ ३५
न व ख उ स र्व ध र मि ॥ व रि वि रा जे वि र क्षे मि
त रि श्र द्र नृ प ना थ ॥ २२ तो स ये स ला चा सि
रो मणि ॥ प रो प का रि प र म ज्ञा नि ॥ दुः ख द
रि द्र दु क र नि ॥ ओ क नं दि जे गा ते ॥ २३ परि
सो नि ना र दा चि गो कि ॥ व सि क सु खा व ला
पो वि ॥ स भे ग जे नि स ने गो कि ॥ उ प मा या सि
तो ये क ॥ २४ ना र दा चि या व चे न वा ले ॥ गा
धि जे कु ति भो धा ग्नि चै ते ॥ व रि व सि क वा

क्याचि नि धृते ॥ सिखा गगना ते कव किति ॥ २५ ॥
२५ ॥ श्व दिराग्नि कुं उासु लयेन यना ॥ करो
निवदन च्यापि हुन ॥ सो डि ता जा ला अति
ति क्षण ॥ शो व्य बाण स ते जे ॥ २६ ॥ व सि द्ध का
द पा अ ओ न ॥ वि ध पा ठे शु प ठ रि ण ॥ प रि त
या सि मा रि त क व ण ॥ त पा पु ण गु र चि ॥ २७ ॥
त या स वा चि पा र र ॥ ज उ न ठे लि स वा ठे
त र ॥ ते यै र वि च वा ग दो र ॥ के वि शे रि र स्य
रै ति ॥ २४ ॥ अ सो वि षा मि त्रा चि व चै ने ॥ वो
लि ला ति प रि सा श्र व ण ॥ क ठो र प रि म वा
क सु म ने ॥ पु ण्ये प रा ग्ये म ग म गि ति ॥ २९ ॥
नि जै र स भै सि शु पा क किति ॥ वा नि ता चि

तैनेलाजति॥सुयपुटेदिपजोति॥तेजेमै
सेमिरवेल॥३०॥समथपुटेरंकमहिमा
मेरसियोजित्तिवालमोवउपमा॥कन्हेर
अर्किकल्पद्रमा॥समानकेसेहणावे॥३१
वसिहहणेजित्तिवालमा॥वथाकोपकरिसि
कासया॥धर्मशांतिमहर्षि॥असेजयातो
श्रेष्ठ॥३२॥तोद्येयेमहाचामहामेन॥अट
कपदिजेविद्युत्॥सुयवंगिचामृगात्॥नृ
पवरहरिश्चद्र॥३३॥परिसोनिवसिह
चिगोष्टि॥विश्वामित्रसमौद्यद्रष्टि॥हणे
मिष्टेविश्वामित्राष्टि॥रक्षितापाविक्व

॥ असे ॥ ३४ ॥ मज्झिमसिद्धिपुटे ॥ सुपाठस
त्तकायसेवापुटे ॥ ध्वेणा मासिकरिनेवेटे ॥ व
चेन घटफुडे बो लिता ॥ ३५ ॥ ये न ह्यने हेत
च घडे ॥ ये वनमु सिजव वेद पडे ॥ मा से
पुर्वजे रौ रव कुडे ॥ ओ गिजति सत्यहि ॥
३६ ॥ ना तरि म्या सिद्धि मुभा ॥ वे ग के हो उ नि
कुरु क्षेमा ॥ मा जि दान या कर पाभा ॥ स्प रै कि
रि न अद्य माचे ॥ ३७ ॥ अणि कये क प्र ति सा
वचन ॥ न र क पा वि सु रा पान ॥ गो प्र जा चे
हन न ॥ हे दोष गहन मज्झघो ॥ ३८ ॥ अं शा
दो शा चे प र्व ल ॥ स ल ठा कि ता नृ प ना थ
म स्त कि धे उ नि न र का ले ॥ पु र्व जा स हि

तबु उवे ॥ ७९ ॥ परि सो निवसि सा चि मा वचे
ना ॥ विश्वामित्र हिक रि प्रतिज्ञा ॥ नृपसत्त
दा विन नाना ॥ येने वू रो न सर्वथा ॥ ४० ॥ ज
रि उतरे लमा सि ये नू सि ॥ सहि दे ई न जो डि
लया सुसता सि ॥ तथा स्तु शे ब्द पाल वा सि
ये रे ग्रंथि बांधि लि ॥ ४१ ॥ मा सि या त पा च्या
अ सं खे को डि ॥ न स मा व ति ब्र ह्मां उ घ ठि
को ण या म्म ण ल त रि न य व ण पु ठि ॥ श्र व ण
के ले पो हि जे ॥ ४२ ॥ आ ल पे म्या अ पर श्रु ति
नि मि लि अ णि क चे र्म द्र कि ॥ र वि बि बं अव
लो कि ता श्रु ति ॥ ग को न प उ लि बु बळे ॥

४३॥ मा जि नि घाले ज्ञान नयन॥ घेत ले सु र्या
चे दर्शने॥ अणि वात्ता बुं पण सेन॥ के ले व रं
को ठि दा हा॥ ४४॥ लो हो चु ण मि धु नि व नि॥ त
प लो प च्या मि सा ध नि॥ हे त कुं डी प द्या स
नि॥ जे प लि अ बुं दे को ठि दा हा॥ ४५॥ जे सि
या त पा च्या ब वे॥ म तु जि ति ला त ये वे वे॥
नृ पा वो पि न ता ला व॥ ज रि मा स्ती या तु वे उ
त रे ल॥ ४६॥ जे सा दा या वा द॥ हो ता उ ठि ला
ना र द॥ ई स्त म णे का ये सा वा द॥ शे ब्द शे ब्द वा
ढे ल॥ ४७॥ हा ग पे ठो नि या दो घे॥ प्र ति शा क
रो नि या वे गे॥ वि श्वा मि त्र प र म रा ग॥ सि द्धा

श्रमापातला ॥ ४८ ॥ सुर्येवं शिचाअभिमानि
अयुध्येगेलानसिद्धमुनि ॥ विद्यामिश्रशि
ष्येदोहि ॥ गुप्तपाठिपाठविले ॥ ४९ ॥ इद्रं स
मेमाजिवाद ॥ दोधाजालाप्रतिज्ञाशेवद
यालागिराजासावध ॥ नरबोधतो गेला
५० ॥ लुप्तिजाउनियासुप्त ॥ पातुनि सुकळव
लात ॥ येरेजाउनियातथे ॥ मुनिनेमस्त
नसांगे ॥ ५१ ॥ वसिष्ठअलाऐकौनिकर्णि ॥
शेव्दैकताधावलाचरणि ॥ नमस्कारुनि
यासिबिकायानि ॥ बैसवोनिअणिलो ॥ ५२
छुदियाउमविल्यानगरि ॥ तोरणेमखरे
घरोघरि ॥ जयजयकारिमंगळतुरि ॥ व

सिद्धनगरि प्रवेशे ॥ ५३ ॥ राये अणुनिधा म
हिद्रालया ॥ कनकपिठि बैसवितया ॥ सह
कुमर नरे देजाया ॥ येति जालि दर्शना ॥
५४ ॥ अघिचेरणि वेविता माये ॥ येरे स्पशिले
अमृतठास्ते ॥ दृष्टं अजी गुनितयाते ॥ मंग
कशेक गौरवि ॥ ५५ ॥ शोभोप-प्यारे पुजा पा
म ॥ कनककुक्षिजल पवित्र ॥ पुजा करो नि सा
गमने ॥ धरा छेत्रे अवति ॥ ५६ ॥ अर्घ्य पाये दि
व्ये वसन ॥ सुगंध सुवास सुमने ॥ नैवेद्ये ता
बुल निराजेन ॥ कनकतब किठे विलि ॥ ५७ ॥
ऐशा उप-प्यारे पुजुनि मुनि ॥ राजा उपाकर
जोडोनि ॥ विश्वामिमा चि वचने स्मरनि म

नि॥ वसिष्ठ बोले सब ज्ञा॥ ५८॥ सविता च ब्र
ह्मासु नि निर्मळ॥ इति परब्रह्म किं किं तिजळ
महो निवाहे पुरतु बळ॥ अहि अचेळ मंगा व
या॥ ५९॥ जे सिसि वगंगा पवित्र॥ तये सिस्या
न्हवि विद्या मित्र॥ शोषा वया पवित्र वगत्र
पसरोनि बैसे ये जे सि॥ ६०॥ सुवित्र पवित्र
स्वर्ग सुवनी॥ विरि विरि जे तपि बुद्धि नि॥ पु
ढे मिरवे अभिया नि॥ ज्यान्ह विजे सि वि
रया त॥ ६१॥ नृपसत्तु हठक॥ तपि को पाणी
संगे चोख॥ भोला च दे अधिका अधिक्
हे जाणि जे सुजाणि॥ ६२॥ असो तपि ह
ने गाराया॥ सत्तु रक्षणि सांउ कोया

कठोनिष्ठांति तित्तेश्व गलिया ॥ अक्षयप्रो ग
भोगिलि ॥ ६३ ॥ शिष्टिराजाचे नवति सुये
वशिष्टप्रख्यात किलि ॥ सहरा ॥ शेनि मास सुकी
ति ॥ देहेका पुनि ताजवा ॥ ६४ ॥ ऐसिया वशिष्टि
या राया ॥ अणि वपति से गुणालया ॥ वनान
जावे मुनिचीश ॥ सहसा गमन न करावे ॥ ६५ ॥
संकेत दाउनि राया ॥ सिद्ध गेला तपासि
राजा सावध अहि नि सि ॥ अमुध्ये सि सर्वदा
६६ ॥ येदिकडे सिद्धाश्रमि ॥ विद्या मित्र अभिवा
दक मि ॥ मांन गया गल काम कामि ॥ कठिता
जाला साक्षे पे ॥ ६७ ॥ सुष्टपाहुनिया मुमिका
अमंष्टुनिया शिका ॥ अकराकुंडे शेवको नि

का॥ निर्मिति मृत्तिका शोघोनि॥ ६८॥ अथर्वण
वेदिचे पाठक॥ अमिच्या रकमिश्रितिक॥ नाना
द्रव्ये अनेक॥ पुस्ययाति अरुक्ता॥ ६९॥ सिंदूरकु
कुमे अरक्तचे दने॥ अर्बकने रजास्य दसु मन
रक्तकुंज प्रेतासन॥ मांस पात्रचे नचि॥ ७०॥ ति
र्थ पुर्ण भरिले घट॥ सुघट वरके भरिले ताठे॥ रक्षा
पुनि शक्ति विपिठे॥ होम गृहिने अरंभिला॥ ७१॥
स्थान करुनिया श्रोतित॥ गेडासनि बैसोनि ह
ति॥ अमिच्या रक कणे बांधुनि सोडिति॥ पिग
ठ जेठा मोकळिया॥ ७२॥ मध्ये बैसोनि अपण
कुंडि रक्षा पिता हुतो रोन॥ श्रुवा पात्रि अवदा
न॥ मंत्रोपचारा रीति॥ ७३॥ अहुति ठाकि

तामये मांसि। घुमदाठला अका। सि। कर्पठ
घाणि वेसति शिषि। चदन घाणि दातु नि।
७४ सप्त रंगि ज्या का उरति। अकरा कुंडिसा
सक अतुलि। हविता देवि पावति नृप्ति। मा
तंग शेक्ति भवनि। ७५ सह अवन पु
णतुलि। होला घग ठाति अद्य शेक्ति। कवण
कामना तुल्यि याचि ति। सांग निगुति गुसव
या। ७६ अवि सणे हे भवे मा गणे। मुर स्याप
देश रि कानने। नि के सणे नि उदा रवने
देति ज्या ति जंग दबा। ७७ विद्या मि यत ये
वेळे देवि वर दानाचे नि बळे। करिता जा

लास्यापदकुचैः ॥ जिवहिसंककाननिः ७८
पक्षेमासअयनेअवच्छेः प्रसवतिवनि
अनेकस्यापदेः विस्तारेवदिजेलतहिशेवदेः
ग्रथंजाइलेपालठाविः ७९ दंतिभृंगीनरवि
सरः निमिलेस्यापदगणाचेभारः पाद
हिनपक्षदरः खेचेरमुचेरशोठिंगः ८०
काननव्यापिलेस्यापदेः मातलिभक्षुनिमां
समप्येः गर्जेतिप्रधानकरोवदेः आसदेति
जेगातेः ८१ रुषिकूनजातिरुषिकेः तिर्थ
यामेसिठोपाधिकेः व्येव्हारसाडिलाव्येव
सायकेः धेनुवनानजातिः ८२ भयेवनि
ननिघेकोण्हिः कल्पातभावितिसकळ



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com